

## षाष्वत सत्यों को खोजना यानी राजयोगी बनना

तप का अर्थ है कष्ट सहन करते हुये भी दिव्यता के लिये प्रज्वलित हो उठना, प्रकाशित हो रुहानी नषे में तमकते रहना। अविराम साधना के द्वारा सर्वोच्चता को छूना। साधना प्रभु मिलन के मार्ग में बाधक बनने वाली दुविधाओं के जलाने का ही जाग्रत प्रयत्न है। जैसे अग्नि कूड़े-कचरे को जला डालती है पर स्वर्ण को शुद्ध करती है उसी तरह सत्य-स्नेह-षान्ति योगी को पावन बनाते हैं, विकार उसी से भस्म हो जाते हैं। योगी किसी को विनष्ट करना सृजनहार का अपमान समझता है। वह सतत् विष्व कल्याण के ही लिये तपता है। जो परमात्मा की दिव्य रचना का विरोध करते हुये निकृष्ट विचारों को फैलाते हैं, नैतिक मूल्यों की बात करते हुये भी आचरण गलत करते हैं, कर्तव्यों के समय सोते हैं पर अधिकार लेने के लिये जाग उठते हैं, योगी उनके सामने एकाग्रचित्त हो जीवन को दिव्य बनाते हुये ज्योतिर्मय हो उठता है। (जैसे मम्मा-बाबा में जबसे ईश्वरीय खुषबू समाई, वासनारें उनके अन्तर्मन में झाँक तक नहीं पाई। वे मानवीय मूल्यों के प्रति इतने सजग और समर्पित थे कि रुहानियत का गहना कभी खिसकने नहीं दिया।)

मन षाष्वत सत्य की ओर ले जाने की गुफा का द्वार खोजता ही रहता है। दैवी मूल्यों में ही स्थायित्व होने से सद्गुणों से ही वह गद्गद् होता है। जरूरत है उत्पादकता बढ़ाने के लिये सद्गुणों के सुनियोजित प्रबन्धन की। अब दुनियावी रसों से तन तंग, मन व्याकुल ही रहता है। यदि मन प्रभु प्यार का पूर्ण रसास्वादन कर ले तो वह हर क्षण तृप्ति का ही गीत गाता रहेगा। जीवन की वासनारें सर्वषवितवान के ज्ञान योग से ही धुलती हैं। परन्तु बुद्धि की अपवित्रतायें आत्मचिन्तन की अग्नि से भस्म होती हैं। दैवी संस्कार आन्तरिक स्वच्छता व आनन्द प्रदान करते हैं जिससे खिन्नता दूर हो जाती है। स्थिर योगी के मन में आत्म सौन्दर्य प्रतिबिम्बित होता है। षरीर और विकार सैन्य का अच्छी तरह निरीक्षण करते हुये वह विजयी बनने की योजना बनाता है। सतत् योगाभ्यास से मन में षान्ति, वाणी में माधुर्य, कर्मों में शुद्धता व तन में पवित्रता लाकर वह कर्मेन्द्रियों का राजा बन जाता है। ज्ञान दीप जग जाने से इन्द्रियों के क्रूर षासन से छूट, दुखों की दासता से मुक्त हो जाता है। पाक मन भय निर्मूल बन प्रीतिकर कर्मों में जुटा रहता है। दधीचि ऋशि की तरह उनके जीवन का हर क्षण ईश्वरीय सेवा में ही सफल होता है।

षरीर आत्मा का विश्राम स्थल है। योगी जीवन निर्वाह के लिये ही भोजन स्वीकार करता है। वह सामर्थ्य का मतवाला न बन जीवन के माधुर्य में ही विश्वास करता है। मन-बुद्धि-संस्कारों का सही उपयोग करते हुये वह षरीर को आत्म उन्नति का साधन बना देता है। उसका षरीर स्वयं के ही लिये नहीं अपितु जीवन के जाग्रत क्षणों में विष्व सेवा हेतु अर्पित रहता है। उसकी नस-नाड़ियों की धड़कने समय की धारा और जीवन के स्पन्दन का अनुभव कराती हैं। इसलिये वह तन-मन की उपेक्षा न कर आत्मचेतना को ही सुस्वास्थ्य का मूल आधार मानता है। अध्यात्म पथ पर प्रगति के लिये षरीर तो उपकरण मात्र है। सच्चे योगी की दृष्टि में मृत्यु स्वादिष्ट मसालों की तरह जीवन को जायकेदार बनाने वाली है। पुनर्जन्म के बाद बचपन को जीवन का स्वर्णिम समय कहा भी गया है। षाष्वत विधान होते हुये भी जीवन का नया परिवर्तन लौकिक दृष्टि से बड़ा कष्टमय है। राजा रंक, फकीर सभी मृत्यु से घबराते हैं। ज्ञान दीप जग जाने पर जब जीव, षिव के सानिध्य से आत्मा के उत्थान-पतन का अध्ययन कर लेता है तो पुनर्जन्म सर्प द्वारा केंचुली छोड़ने की तरह स्फूर्तिदायिनी सर्जरी के

राजयोग किसी से किनारा करना नहीं सिखाता। उसमें इतना बल है कि वह अधम से अधम आत्मा को भी पावन कर सकता है। योगी आत्मायें स्वयं पवित्र बन वातावरण में भी पावनता की सुगन्ध फैलाती रहती हैं। आस-पास वाले भी पतितपने से दूर होने लगते हैं। जैसे जल मलिन हाथों में जाने से धबराता नहीं, प्रक्षालन करना उसका निजी स्वभाव है। यदि पानी गन्दे हाथों को धोने से मना कर दे तो गन्दगी धुलेगी कैसे ? कलियुगी संसार को सतयुगी सतोप्रधान बनाने के लिये अब सच्चे गीता का ज्ञान जल चाहिये। सद्ज्ञान से ही वित्त में प्रसन्नता छई रहेगी। मन निर्मल तो वाणी, प्वास, संकल्प ही नहीं तन से होने वाले कर्म भी सत्कर्म बनते जायेंगे क्योंकि राजयोग अन्तरात्मा के शुद्धिकरण का ही विधि विधान है। सुसुप्त मन को जंक्रुत करके जाग्रत करने वाली प्रक्रिया है। जन्म-जन्मान्तर से आत्मा पर जमी विकारों की जंग को उखाड़ फेंकने वाली षोधन क्रिया है। ईष्वरीय स्मृति कोई साधारण प्रक्रिया नहीं है। आन्तरिक शुद्धि का यही सर्वश्रेष्ठ उपक्रम है अन्यथा काम-क्रोधादि के वर्षीभूत इन्द्रियाँ फिर-फिर बगावत करने पर तुल जाती हैं।

आत्मा बीजरूप स्थिति से परमानन्द का अनुभव करने लगती है तब ही आन्तरिक सफाई हो पाती है। कई जन्मों की जमी हुई वासनायें सीधे हार कैसे मानेंगी। कभी-कभी तो वासुकी नाग की तरह फुफकारने लगती हैं। परन्तु कभी भी धबराइये नहीं। भीतर से धुलाई होने का यही शुभ संकेत है। जैसे बहुत समय से गन्दगी का ढेर जमा हो और उसकी सफाई करने जायें तो अन्दर जाकर और भी बद्बू आयेगी। यदि आन्तरिक षोधन नहीं हो पायेगा तो विकार-बुराइयाँ अन्दर ही अन्दर खोखला करती जायेंगी। जीवन का सर्वांगीण, विकास होने ही नहीं देगी। सम्पूर्ण स्वास्थ्य से मतलब है षारीरिक, मानसिक, सामाजिक और आध्यात्मिक रूप से बालिष्ठ। ऐसी राजयोगी-राजहंस आत्मायें सारे संसार के लिये प्रकाष स्तम्भ के समान बन जाती हैं। परम सत्य की खोज के लिये ही उनके प्वास संकल्प चलते हैं।

राजयोगी आत्माओं का हर क्षण बहुत बेषकीमती होता है। वे जानते हैं कि प्रतिभावान विद्यार्थी एक साल फेल हो जाये तो जीवनभर पछतायेगा। वात्सल्य से भरी माँ का बच्चा आठ मासिया पैदा हो जाये तो स्वयं को उम्र भर कोसती रहती है। सम्पादक साप्ताहिक पत्र को समय पर नहीं निकाल पाये तो उसके साल भर के ग्राहक टूट जाते हैं। दिहाडी मजदूर को मजदूरी नहीं मिले तो भूखे सोना पड़ता है। सिकन्दर महान आधा राज्य देकर मौत को एक घण्टा भी नहीं टाल पाया। वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर के गिरने से एक मिनट पहले जो बाहर निकल गये वे स्वयं को कितना भाग्यषाली समझते हैं। जैसे धावक एक सेकेण्ड की वजह से स्वर्ण पदक खो देता है तो सिर धुनकर पछताता है। वैसे ही योगी-प्रयोगी आत्मायें प्वास-२ में प्रभु को समाकर सफलता मूर्त बन पाती हैं। एक पल भी व्यर्थ गया तो कल्प-कल्पान्तर, जन्म-जन्मान्तर

के लिये भाग्य में कमी आ जाती है। अतः वे हर पल सुमिर-सुमिर सुख पाते हैं। वे मनमत-परमत की पतवार से कलियुगी संसार सागर को पार नहीं करते बल्कि हर एक स्थिति-परिस्थिति में वे श्रीमत की पतवार पकड़कर भव सागर को तर जाते हैं। सुखों में नाच उठना और दुःखों में धराषायी हो जाना तो ईश्वरीय सन्तान होने का अपमान करना है। जब हम परमात्मा समान पवित्रता-सुख-खान्ति-आनन्द-परोपकार करते रहते हैं तो तूफान भी तोहफे बन जाते हैं। समस्यायें गरम समोसों की तरह जीवन को जायकेदार बना देती हैं, भोग-विलास से दूर योगी जीवन परम सुहाना बन जाता है। फिर तो हमारा वातावरण पूरे पर्यावरण को सुमधुर संगीतमय बना देता है।

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स

[www.bkvarta.com](http://www.bkvarta.com)